

सतीश विमल के काव्य-संग्रह 'विनाश का विजेता' में अस्तित्व और आत्म-विसर्जन

अर्जुन सिंह

शोधार्थी, हिंदी विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर

ईमेल: ar3582270@gmail.com

शोध-सार

आज की हिंदी कविता केवल बाहरी घटनाओं का वर्णन करने तक सीमित नहीं है, बल्कि वह मनुष्य के भीतरी अकेलेपन, संघर्ष और जीवन की सच्चाई को गहराई से समझने की कोशिश करती है। सतीश विमल का काव्य-संग्रह 'विनाश का विजेता' इसी सोच का एक बहुत सुंदर और सच्चा उदाहरण है। इस संग्रह का नाम ही बताता है कि कठिन से कठिन समय और संकटों के बीच भी मनुष्य हार नहीं मानता, बल्कि अपने आत्मसम्मान और जीने की इच्छा को बचाए रखता है। प्रस्तुत शोध-पत्र में इस संग्रह की मुख्य कविताओं और गज़लों के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि कवि किस तरह मुश्किल हालात, अहंकार और सामाजिक दबावों का सामना करते हुए एक सच्चे और सादगीपूर्ण जीवन की खोज करता है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि कवि के लिए 'बाढ़' और 'आग' केवल नुकसान पहुँचाने वाली चीजें नहीं हैं, बल्कि वे मन के झूठे घमंड और पुरानी कमजोरियों को धोकर साफ़ करने का माध्यम हैं। इसी तरह, कश्मीर की कड़ाके की 'सर्दियाँ' और 'बर्फ़' मनुष्य को यह सिखाती हैं कि संकट के समय धैर्य रखना कितना जरूरी है। यह शोध-पत्र यह सिद्ध करता है कि सतीश विमल की कविता निराशा में डूबने के बजाय मनुष्य को अपने अहंकार को छोड़कर एक मजबूत और सच्चे इंसान के रूप में जीने का अटूट हौसला देती है।

बीज-शब्द : विनाश का विजेता, अस्तित्व, आत्म-विसर्जन, जीने की चाह, सर्दियों की सीख, स्वाभिमान, समकालीन हिंदी कविता।

प्रस्तावना:

हिंदी साहित्य में समय के साथ कविता का रूप और उसका विषय लगातार बदलता रहा है। आज का दौर ऐसा है जहाँ भागदौड़, तकनीक और दिखावे की जिंदगी ने इंसान को बाहर से तो बहुत कुछ दिया है, लेकिन अंदर से उसे अकेला और बेचैन कर दिया है। इंसान बड़ी-बड़ी इमारतों, पदों और भौतिक सुखों के

पीछे भाग रहा है, लेकिन अपने सच्चे स्वभाव और मानसिक शांति से दूर होता जा रहा है। ऐसे दौर में जब बहुत सी कविताएँ केवल ऊपरी बातों या नारों तक सिमट कर रह जाती हैं, तब सतीश विमल का काव्य-संग्रह 'विनाश का विजेता' हमें रुककर अपनी जिंदगी के बारे में गहराई से सोचने का मौका देता है। सतीश विमल जी का यह संग्रह केवल दुख या शिकायत का रोना नहीं रोता, बल्कि यह जीवन के कड़वे सच को सीधे स्वीकार करता है। किताब का शीर्षक—'विनाश का विजेता'—अपने आप में एक गहरा अर्थ छिपाए हुए है। आमतौर पर हम 'विनाश' का मतलब केवल बर्बादी, टूट-फूट या हार समझते हैं। लेकिन कवि की नज़र में विनाश का एक दूसरा पहलू भी है। कवि का मानना है कि जब तक इंसान के भीतर का झूठा घमंड, दिखावा और सामाजिक मुखौटे नहीं टूटते, तब तक वह सचमुच आजाद और सुखी नहीं हो सकता। यहाँ 'विजेता' का अर्थ किसी दूसरे पर जीत हासिल करना नहीं है, बल्कि हर मुश्किल का सामना करते हुए अपने आत्मसम्मान और जीने की उम्मीद को बचाए रखना है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य सतीश विमल की कविताओं के इसी गहरे और मानवीय संदेश को सरल व स्पष्ट रूप में समझना है।

घमंड का टूटना और मन की मुक्ति: 'इच्छा' कविता का अध्ययन

मनुष्य जब तक अपनी बनाई झूठी दुनिया, पदों और धन-दौलत के घमंड में रहता है, तब तक वह अपनी असली पहचान से दूर रहता है। संग्रह की प्रमुख कविता 'इच्छा' में कवि किसी साधारण सुख या आराम की मांग नहीं करता, बल्कि वह स्वयं ऐसी ताकतों को बुलाता है जो उसके मन की सारी पुरानी रुकावटों को बहा ले जाएँ:

“मैंने ही शायद इच्छा की थी
बाढ़ की
बह आए पानी
बहा ले जाए मेरी सारे विवशताएँ
मुझको हल्का कर ले”

यहाँ 'बाढ़' केवल नदी का पानी नहीं है, बल्कि वह मन को साफ़ करने वाली एक ताकत है। नदी के किनारे उन बंधनों और सीमाओं की तरह हैं जो इंसान को संकीर्ण दायरे में कैद रखते हैं। जब पानी इन

किनारों को तोड़ता है, तो मनुष्य अपनी मजबूरियों से आजाद होकर भीतर से 'हल्का' महसूस करता है। इसके आगे कवि अपने भौतिक घमंड के जलने की बात बहुत निडरता से करता है:

“मेरा घर जल जाए
दब जाएँ छत के नीचे पले
हुए
सफलताओं के भ्रम
ताकि मैं बची-खुची राख-ईंटों के साथ
अपने गर्व को कह सकूँ कबाड़ा”

अपने झूठे अहंकार को 'कबाड़ा' कहने के लिए बहुत बड़े दिल और हिम्मत की जरूरत होती है। जब तक इंसान की यह बनावटी दुनिया राख नहीं बनती, तब तक वह सादगी से नहीं जी सकता। इस प्रकार कवि के लिए विनाश कोई अंत नहीं, बल्कि एक नए और सच्चे जीवन की शुरुआत है, जहाँ इंसान बिना किसी दिखावे के अपनी असली पहचान को पा लेता है।

मुश्किलों को स्वीकार करना और जीने का धैर्य: 'सर्दियाँ' कविता का विचार

मुसीबत के समय उतावलापन दिखाना या कोरी बातें करना इंसान को और कमजोर बना देता है। कश्मीर के मौसम और कड़के की ठंड को आधार बनाकर लिखी गई कविता 'सर्दियाँ' हमें मुश्किल वक्त से मुकाबला करने की बहुत बड़ी सीख देती है:

“शताब्दियों तक
सर्दियों की धूसर चादर ओढ़ने के बाद
कितना अजीब लगता है
धूप और गर्मी की बात करना...
इतना उतावलापन
मिज़ाज को नंगा कर देता है
और हवा की ज़द में आकर
मिज़ाज को रोग लग जाता है”

कवि का कहना है कि जब चारों तरफ ठंड और संकट का माहौल हो, तब बिना तैयारी के केवल गर्मी या सुख की रट लगाना स्वभाव को बीमार कर देता है। हर मौसम और हर संकट का अपना एक नियम होता है, जिसका सम्मान करते हुए धैर्य से काम लेना चाहिए:

“उचित यही है कि
सर्दियों के रंग और गुण का
सम्मान किया जाए
और बर्फ की कामना की जाये
सर्दियाँ यथाविधि आचार को मानती हैं”

कविता की सबसे सुंदर और दिल को छू लेने वाली बात इसकी अंतिम पंक्तियों में सामने आती है:

“सर्दियाँ बर्फ होकर बचाती हैं
हमारे जीवित रहने की चाह को
बर्फ होने से”

यहाँ कवि ने बर्फ के दो अलग-अलग अर्थ बताए हैं। बाहर की बर्फ जमीन पर एक चादर की तरह बिछ जाती है, ताकि उसके नीचे दबे हुए बीज और जीवन की गर्माहट सुरक्षित रह सके। अगर बाहर यह चादर न हो, तो सर्द हवा इंसान के भीतर जीने की इच्छा को ही हमेशा के लिए ‘बर्फ’ यानी बेजान बना देगी। इस तरह मुश्किल हालात भी इंसान को भीतर से मजबूत बनाते हैं।

व्यवस्था का दबाव और अपने विचारों की रक्षा: 'स्वाभिमान' कविता का संदेश

सतीश विमल जी केवल मन की बात नहीं करते, बल्कि वे समाज और व्यवस्था की उन नीतियों को भी अच्छी तरह समझते हैं जो आम इंसान की सोच को दबाने का काम करती हैं। कविता 'स्वाभिमान' में कवि ने इस बात को बहुत अनोखे तरीके से समझाया है:

“वे सुधरे हुए हाथों में
सुधार के दस्ताने पहने
मेरे पास आए

और सुधार के संहारक औज़ारों से
व्यक्तित्व की नक्काशी करने लगे”

अक्सर समाज और व्यवस्था ‘भलाई’ और ‘सुधार’ के नाम पर इंसान की अपनी सोच को ही खत्म करने लगती है। इसके बाद कवि आईने का उदाहरण देकर एक बहुत मार्मिक बात कहता है:

“मेरे व्यक्तित्व के आईने से
दृष्टिबोध का सिल्वर नाइट्रेट
खरोच खरोच कर उठा लिया गया
और मुझे आईना ही रहने दिया”

हम सब जानते हैं कि काँच के पीछे जब तक मसाला (सिल्वर नाइट्रेट) न लगा हो, वह चेहरा नहीं दिखा सकता; वह केवल आर-पार दिखने वाला एक बेजान शीशा बनकर रह जाता है। इसी तरह व्यवस्था इंसान से सच देखने और अपनी राय रखने की ताकत छीन लेती है। इंसान समाज में जीता तो है, लेकिन वह अपनी बात कहने की हिम्मत खो बैठता है।

भावनाओं की निजता और सादगी: ‘खुशबुओं की सुरक्षा के लिए’

आज के दौर में हर छोटी-बड़ी भावना और निजी अहसास का सोशल मीडिया और बाज़ार में दिखावा किया जाता है। कविता ‘खुशबुओं की सुरक्षा के लिए’ में कवि अपनी भावनाओं को इस खुले प्रदर्शन से बचाने की बात करता है:

“रात भर
करवटों की कलम से
सेज पर लिखी गई कविताएं
खुशबू समेत
चुरा ले गई
सुबह की पहली किरण
फिर दिन भर

वही कविताओं की खुशबू प्रसारित करती रही
चहुं-ओर रोशनी”

यहाँ सुबह की रोशनी उस बाहरी दुनिया का प्रतीक है जो इंसान के सबसे निजी और कोमल अहसास को भी तमाशा बना देती है। कवि दिखावे के खिलाफ अपनी बात रखते हुए कहता है:

“आनंद वस्त्र नहीं
न्हें पहनकर हम
ज़माने-ज़माने सफ़र करें
आनंद हमारी नग्नता की तरह
हमारा अस्ल है
हमारी जपमाला के फेरों में
हमारी रात सुरक्षित है
समस्त खुशबुओं के साथ !”

कवि का मानना है कि सच्चा आनंद कोई कपड़ा नहीं है जिसे पहनकर ज़माने को दिखाया जाए। सच्चा सुख तो मन की शांति और सादगी में है, जिसे बाहर की दुनिया की नजरों से बचाकर रखना ही सबसे अच्छा उपाय है।

सामाजिक पाखंड और दिखावटी सुरक्षा: 'वेश्या' और 'छाता'

कवि समाज के दोहरे चरित्र पर भी बहुत तीखी चोट करता है। कविता 'वेश्या' में केवल तीन पंक्तियों में समाज के पाखंड का पर्दाफाश किया गया है:

“प्रभु ! अपने किसी ऐसे भक्त को
आज मेरे द्वार भेजो
जिस पर तेरी शक्ति प्रसन्न हो”

यह बात उस समाज पर करारा तमाचा है जहाँ लोग दिन में तो धर्म और सदाचार के उपदेश देते हैं, लेकिन रात के अंधेरे में वही लोग पैसे के बल पर इंसानियत की बोली लगाते हैं। इसी तरह, छोटी सी कविता 'छाता' में समाज की जरूरत से ज्यादा औपचारिक सुरक्षा पर बात की गई है:

“तभी किसी ने थमा दिया
इक छाता हाथ में
फैला हुआ
में सूख गया”

प्यार और संवेदना की बारिश में भीगना ही इंसान को जिंदा रखता है। लेकिन जब समाज सुरक्षा और नियमों का छाता तान देता है, तो इंसान का दिल धीरे-धीरे सूख जाता है।

गज़लों में जीवन की सच्चाई और अटूट हौसला

सतीश विमल जी की गज़लों में भी जिंदगी की सच्चाई और कभी न हारने वाला हौसला बहुत साफ दिखाई देता है। वे समय के बीतने को पसीने की तरह बहती हुई उम्र के रूप में देखते हैं:

“पसीने की सूरत थकां बह रही है
बड़ी तेज़ उम्र-ए-रवां बह रही है”

और जब जिंदगी में चारों तरफ अकाल और परेशानियाँ हों, तब उनका हौसला इस रूप में सामने आता है:

“बूंद - बूंद सूखा जब उतरा मिट्टी में
मैंने अपने खेतों में बादल को बोया”

सूखे खेतों में राने के बजाय 'बादल बोने' की बात करना इंसान के भीतर की उस असीम ताकत को दिखाता है जो किसी भी मुश्किल के सामने सिर झुकाने से मना कर देती है।

निष्कर्ष

पूरे संग्रह का गहराई से अध्ययन करने के बाद यह बात बिल्कुल साफ हो जाती है कि सतीश विमल की कविता केवल शब्दों का खेल नहीं है, बल्कि वह जीवन को बहुत नजदीक से देखने और समझने की कोशिश है। वे न तो किसी झूठे सपने में बहकते हैं और न ही मुश्किलों से डरकर भागते हैं। वे सिखाते हैं कि जब जिंदगी में परेशानियाँ आएँ, तो घमंड छोड़कर सादगी अपनाना ही समझदारी है। उनका मनुष्य सर्दियों की ठंड सहता है, अपने अहंकार को कबाड़ा कहता है, और सूखे के समय में भी नए बादल बोने की हिम्मत रखता है। यही अटूट हौसला और सच्चाई सतीश विमल के मनुष्य को हर परिस्थिति में सच्चे अर्थों में 'विनाश का विजेता' बनाती है।

संदर्भ-सूची

- विमल, सतीश. विनाश का विजेता (काव्य-संग्रह)।
- कविताएँ: 'इच्छा'(पृष्ठ 56)
- सर्दियाँ'(पृष्ठ 54)
- स्वाभिमान(पृष्ठ 45)
- खुशबुओं की सुरक्षा के लिए'(पृष्ठ 64)
- वेश्या(पृष्ठ 59)
- 'छाता'(58)
- संग्रह में संकलित गज़लें एवं शेर (पृष्ठ 66 से 70)